संगोष्ठी स्थल : काउंसिल हाल, तेजपुर विश्वविद्यालय (Council Hall, T.U.)

संगोष्ठी से सम्बन्धित किसी भी तरह की जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

डॉ.अनुशब्द/Dr. Anushabd, संगोष्ठी-संयोजक/Coordinator of the Conference, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम-784028

दूरभाष : +91 8876049200, 03712-275755

ई-मेल : rallatu2017@gmail.com

*संगोष्ठी सम्बन्धी नवीन सूचनाओं के लिए कृपया विश्वविद्यालय की वेबसाइट देखते रहें।

मुख्य संरक्षक

प्रो. मदन मोहन शर्मा
माननीय कुलपति (कार्यकारी), तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

एवं

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
निदेशक, अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार

व

श्री अरुण माहेश्वरी
अध्यक्ष, वाणी फ़ाउण्डेशन, नयी दिल्ली

संरक्षक

डॉ. बीरेन दास
माननीय कुलसचिव, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

सलाहकार समिति

प्रो. प्रशान्त कुमार दास
संकायाध्यक्ष, मानविकी एवं समाजविज्ञान संकाय, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर

प्रो. सुनील कुमार दत्त
अध्यक्ष, संस्कृति अध्ययन विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

प्रो. मोहन
संकायाध्यक्ष, कला संकाय एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. चर्या धर्म भूमि
ललित कला महाविद्यालय, थाईलैंड, बैंकॉक

डॉ. आमिला दमयन्ती
सौन्दर्य कला विश्वविद्यालय, कोलम्बो, श्रीलंका

श्री हृदय शइकिया
संयुक्त कुलसचिव, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

डॉ. मुनव्वर इक़बाल
उपपुस्तकालयाध्यक्ष, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

संगोष्ठी-अध्यक्ष : प्रो. अनन्त कुमार नाथ, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय

संगोष्ठी-उपाध्यक्ष : डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय

संगोष्ठी-संयोजक : डॉ. अनुशब्द, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय

संगोष्ठी सह-संयोजिका : डॉ. चारु गोयल (अतिथि अध्यापिका), हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय

पंजीयन-प्रपत्र/Registration Form
अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी/International Conference
हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय
दिनांक : 20-22 नवम्बर, 2017
"एशियाई जीवन, साहित्य एवं कला में राम (पूर्वोत्तर के विशेष संदर्भ में)"

1. नाम/Name : .....
2. पदनाम/Designation: .....
3. पता/Address : .....
4. ई-मेल/e-mail : .....
5. संस्था/Institution: .....
6. दूरभाष/Telephone No. : .....
7. पुरुष(M)/स्त्री(F) .....
8. आवासीय सुविधा/Accomodation Facility : हाँ/Y ( ) ना/N( )
9. यात्रा विवरण/Journey Details : .....
   आगमन का समय/Time of departure: .....
   प्रस्थान का समय/Time of arrival .....
10. आलेख का शीर्षक/Title of the paper: .....
11. पंजीयन शुल्क का विवरण/Details of the registration fees:
    राशि/Amount: .....
    ड्राफ्ट विवरण (Details of draft)/कैश (Cash) : .....

दिनांक/Date..... हस्ताक्षर/Sign.....

तेजपुर विश्वविद्यालय

वाणी फ़ाउण्डेशन

अयोध्या शोध संस्थान

हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम और अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त तत्वावधान में तथा वाणी फ़ाउंडेशन, नयी दिल्ली के सहयोग से आयोजित

त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी/Three day International Conference

"एशियाई जीवन, साहित्य एवं कला में राम (पूर्वोत्तर भारत के विशेष सन्दर्भ में)"/"Ram in Asian Life Literature and Art (In the special context of Northeast India)"

20-22 नवम्बर, 2017

प्रायोजक
अयोध्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार
एवं
वाणी फ़ाउण्डेशन, नयी दिल्ली

आयोजक
हिन्दी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर
असम-784028

एशियाई जीवन, साहित्य एवं कला में राम (पूर्वोत्तर भारत के विशेष सन्दर्भ में

Ram in Asian Life Literature and Art (In the special context of Northeast India)

महोदय/महोदया,

'सहरा में जमाँ, मक्काँ के खो जाती हैं
सदियों बेदार रह के सो जाती हैं
अक्सर सोचा करता हूँ खिल्वत में फ़िराक़
तहजीबें क्यों गुरुब हो जाती हैं।'

जब भी दिक् और काल में सांस्कृतिक गतिरोध या सांस्कृतिक विलम्बन उपस्थित होता है तो अक्सर यह नौबत आती है और सांस्कृतिक विलोपन का संकट पैदा हो जाता है। आज यह संकट अपनी पराकाष्ठा पर है। तकनीक और प्रौद्योगिकी ने हमारे भौतिक विकास को तीव्र गति दे दी है और इस स्पर्द्धा में संस्कृति काफी पीछे छूटती जा रही है और सभ्यता काफी आगे बढ़ गयी है। भौतिक दृष्टि से सभ्यता इस सौरमंडल से परे दूसरे सौरमंडल में प्रवेश करना चाहती है तो दूसरी ओर हम सांस्कृतिक दृष्टि से इतने कंगाल होते जा रहे हैं कि पड़ोस में दीवार के पार की कोई खोज-खबर नहीं ले पाते। यह संवेदनशून्यता हमें मानव-रोबोट का दर्जा देती जा रही है। सभ्यता तो मात्र आबोहवा है और संस्कृति वह प्राण-वायु है जो हमारी संवेदना को स्पंदन देती है, मनुष्यता को शक्ति देती है और हमें होमो-सिपियन प्राणी सिद्ध करती है। जिस दिन हमारे दिलों में दूसरों के लिए मर-मिटने की भावना आयी, वही हमारी संस्कृति की जन्मतिथि है और जिस दिन आदमी ने दो पत्थरों को टकराकर आग पैदा की, उसी दिन हमारी सभ्यता का जन्म हुआ था। दरअसल, किसी सभ्यता का अवसान सम्भव है, लेकिन किसी संस्कृति का पूर्णतः विनाश सम्भव नहीं। कारण कि सभ्यता का निवास विचारों में होता है और संस्कृति का अधिवास संस्कारों में होता है। संस्कृति हमारी रगों में दौड़ती है और सभ्यता कलेवर में। इसलिए आधुनिकता, भूमंडलीकरण, बाजारवाद आदि पूँजीवादी अवधारणाएँ हमारे सांस्कृतिक आशियानों पर लाख बिजलियाँ बरपाएँ लेकिन उनके तिनके नष्ट नहीं हो पाए हैं। वे अपनी टहनियों को इतनी सख्ती से पकड़े हुए हैं कि फिर से नीड़ का निर्माण सम्भव है। बस, जरूरत है आयातित चक्रवातों को रोकने की। मैं समझता हूँ कि इस दौर में रामकथा से बढ़कर कोई सुरक्षा कवच नहीं। रामकथा ही वह ढाल है जिसकी वजह से अब भी हमारे रोम-रोम में राम बसते हैं। कारण कि राम और कृष्ण मनुष्यता के बहुत बड़े सपनों के नाम हैं। वे हमारी पुतलियों में नाचते हैं, धमनियों में तैरते हैं।

रामकथा की जड़ें बहुत गहराई में जमी हुई हैं। और, उसकी शाखाओं एवं प्रशाखाओं की व्याप्ति देश-देशान्तर तक है। छोटे-मोटे साम्य-वैषम्य के साथ पूरे एशिया में उसकी पैठ है। पूरे एशियाई जनमानस पर इसका साम्राज्य है। दशकों पहले अपने शोध-प्रबन्ध में फादर कामिल बुल्के ने साबित कर दिया है कि रामकथा केवल भारतीय कथा नहीं है, यह अन्तर्राष्ट्रीय कथा है। रामकथा के इस विस्तार को फादर कामिल बुल्के आदिकवि 'वाल्मीकि की दिग्विजय' कहा करते थे। इस कथा की जड़ें ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में मिलती हैं। लेकिन यह वाचिक परम्परा में ही सीमित रह जाने के कारण अप्राप्य है। राम को ही 'बोधिसत्व' मानकर रामकथा को जातक कथाओं में स्थान मिला है। वाल्मीकि से प्रेरित और प्रभावित होकर भारत की विभिन्न भाषाओं में रामकथा के रूपान्तर मिलते हैं। इसकी स्पष्ट छाप देश-विदेश की साहित्येतर कलाओं में भी मिलती है। श्रीलंका, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया की चित्रकला और मूर्तिकला पर रामकथा के दृष्टान्त मिलते हैं। मारिशस में हमारे पूर्वजों को काले पानी की सजा मिली थी तो दिन भर जी तोड़ परिश्रम के बाद शाम को रामकथा (रामायण) ही उनको राहत देती थी तथा हताशा और अवसाद से उबारती थी। रामायण उनके लिए ट्रैन्क्विलाइजर थी। यही उनकी मानसिक खुराक थी, संजीवनी थी।

मानसिक और आर्थिक साम्राज्यवाद से निपटने के लिए इसी संजीवनी कथा को पुनर्जीवित करने की जरूरत है और चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से लोगों के मानस की देहरी पर राम नाम रूपी दीपक को प्रतिष्ठित करने की महती आवश्यकता है :

रामनाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार
तुलसी भीतर बाहिरहुँ, जौ चाहसि उजियार

इसीलिए हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से "एशियाई जीवन, साहित्य एवं कला में राम (पूर्वोत्तर भारत के विशेष सन्दर्भ में)" शीर्षक विषय पर त्रि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है जिसमें निम्नांकित उपशीर्षकों के अन्तर्गत विचार-विमर्श सम्भव है :

1. एशिया के विभिन्न देशों के जीवन, साहित्य एवं कला में राम
2. पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न राज्यों के जीवन, साहित्य एवं कला में राम
3. पूर्वोत्तर भारत में रामकथा एवं कला का महत्त्व
4. उत्तर भारत तथा पूर्वोत्तर भारत की रामकथा एवं कला का तुलनात्मक विवेचन
5. माउली की मुखौटा कला में राम
6. विभिन्न एशियाई कलाओं में राम
7. वर्तमान परिदृश्य में रामकथा की प्रासंगिकता
8. रामलीला के विविध रूप
9. मानवीय मूल्य, मर्यादा एवं आदर्श के परिप्रेक्ष्य में राम

- मुख्य विषय से सम्बन्धित अन्य उपविषयों पर भी प्रतिभागी अपने आलेख प्रस्तुत कर सकते हैं लेकिन इसके लिए संगोष्ठी-संयोजक से पूर्वानुमति लेना आवश्यक होगा। चयनित प्रतिभागियों को ही प्रपत्र वाचन की अनुमति दी जाएगी।

महत्वपूर्ण तिथियाँ :

- आलेख-सारांश भेजने की अन्तिम तिथि : 05 नवम्बर 2017
- पूर्ण आलेख भेजने की अन्तिम तिथि : 10 नवम्बर 2017
- आलेख-प्रस्तुति हेतु स्वीकृति की सूचना : 15 नवम्बर 2017

शब्द-सीमा : आलेख-सारांश कम-से-कम 250-350 शब्दों में **तीन-चार संकेत शब्दों (Key Words)** के साथ होना चाहिए। आलेख-सारांश केवल हिन्दी या अँग्रेजी में ही स्वीकार किये जाएँगे।

आलेख कम-से-कम 3000-5000 शब्दों में होना चाहिए तथा **सन्दर्भ (Reference) के लिए MLA(7th Edition) शैली** अपनायी जानी चाहिए।

फॉन्ट : आलेख-सारांश और आलेख **अनिवार्यतः यूनिकोड (मंगल)** फॉन्ट में ही स्वीकार्य होंगे।

प्रपत्र-प्रस्तुति की भाषा : हिन्दी, असमिया एवं अंग्रेजी (प्राथमिकता हिन्दी को दी जाएगी)

ई-मेल : सभी आलेख-सारांश एवं आलेख **rallatu2017@gmail.com** पर **वर्ड तथा पीडीएफ दोनों फॉर्मेट** में भेजें।

संगोष्ठी-शुल्क : **विद्यार्थियों के लिए रु. 1000/-**
शोधार्थियों के लिए रु. 1500/-
अध्यापकों एवं अन्य बुद्धिजीवियों के लिए रु. 2000/-

शुल्क भुगतान विधि : पंजीकरण के लिए 'REGISTRAR, TEZPUR UNIVERSITY' के पक्ष में डिमांड ड्राफ्ट संयोजक के पते पर भेजें। या आयोजन समिति से प्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क करके पंजीयन कराएँ और पंजीयन रसीद प्राप्त करें।

*पंजीयन दिनांक 20/11/17 के प्रातः 9 बजे से 10 बजे तक सम्भव है। हालाँकि अग्रिम पंजीयन से प्रतिभागियों के लिए आवास एवं भोजन के प्रबन्ध में सुविधा होगी।

आवास व्यवस्था : प्रतिभागियों को आवास की सुविधा हेतु 31अक्टूबर 2017 तक संगोष्ठी-संयोजक को सूचना देनी होगी। आवास का खर्च प्रतिभागियों को स्वयं वहन करना होगा।

*पंजीकरण शुल्क में संगोष्ठी-सामग्री, प्रमाण-पत्र और दोपहर का भोजन एवं चाय (केवल संगोष्ठी के दौरान) शामिल है।

Tezpur University

আন্তর্জাতিক মাতৃভাষা দিবস

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

International Mother Language Day

21 February, 2020

Vanue : Education Department Seminar Hall, Tezpur University

वक्तव्य

মাতৃভাষাৰ গুৰুত্ব আৰু উপযোগিতা

मातृभाषा का महत्व तथा उपयोगिता

Importance of Mothertongue and Utility

समय – 3:00 P.M.

वक्ता : प्रो. अनंत कुमार नाथ , पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
বিশিষ্ট বক্তা :অনন্ত কুমাৰ নাথ, পূর্ব অধ্যক্ষ, হিন্দী বিভাগ

নির্মালী গোস্বামী, সহায়ক প্রোফেসর, সমাজ শাস্ত্র বিভাগ, তেজপুর বিশ্ববিদ্যালয়
নির্মালি গোস্বামী, সহকাৰী, অধ্যাপক, সমাজ শাস্ত্র বিভাগ, তেজপুৰ বিশ্ববিদ্যালয়

चित्रकला प्रतियोगिता : 10:30 – 11:30
চিত্রাংকন প্রতিযোগিতা : ১০:৩০ - ১১:৩০